नवप्रवाह

2025-26

शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुन्दा

जिला बालोद (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकन 'B' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

=== शहीदों को नमन ===

शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुन्दा के शैक्षणिक स्टाफ

शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुन्दा के अशैक्षणिक स्टाफ

नवप्रवाह

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका 2025-26

शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय, अर्जुन्दा
जिला- बालोद (छ. ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकन
'B' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संरक्षक

डॉ. सोमाली गुप्ता
प्राचार्य

संपादक मंडल

श्रीमती दीपिका कंवर
डॉ. प्रदीप कुमार प्रजापति
डॉ. जयनेन्द्र श्रीवास
श्री लुकेश चंद्राकर
ठा. प्रज्जवल सिंह पवार

Cover Page design : Dr. Jaynendra Shrivas

अनुक्रमाणिका

शहीद दुर्वासा निषाद : एक परिचय	
सन्देश	
प्राचार्य की कलम से	
महाविद्यालय एक नज़र	01-03
उत्तरदान : ज्ञान, कौशल एवं उत्तरदायित्व, हस्तांतरण की जीवन्त शैक्षणिक परंपरा	04-05
चरित्र (लघु कथा)	06
NSS और मेरा जीवन	07
IDYEP रायगढ़: मेरी यादगार यात्रा	08
वाणिज्य : भविष्य की दिशा	09
बछरु ढीला गे	10
शिक्षक	10
माँ	11
बेटी	11
भारत की विरासते	12
कलयुग की गौमाता	13
वित्तीय जागरुकता आज के युवाओं की जरुरत	14
बच्चों भविष्य क्या है ?	15
कलयुग में स्त्री व्यथा	16
कविता की संवेदना	17-18
नारी : एक शक्ति एक पहचान	18
भारत की शान	19
जड़कल्ला के दिन	20
तू एक बार लड़का बनकर तो देख	21
सोशल मीडिया : वरदान या अभिशाप	22
अकेला मुसाफिर	23
साहित्यकार कैलाश बनवासी जी से भेंट वार्ता के कुछ अंश	24-27

अनुक्रमाणिका

श्री दुर्गा प्रसाद पारकर जी से भेंट वार्ता	28-32
जीवन का आधार है खेल	33-34
दैनिक जीवन में भूगोल	35
महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास	36-37
वन्दे मातरम हिंदी कविता के रुप में	37
सामाजिक समरसता के प्रतीक गुरु घासीदास	38-40
मोर छत्तीसगढ़, मोर संस्कार	41
साल बदलेगा	42
एक वीर की गाथा	42-43
तेरे काबिल नहीं ...	43-44
और क्या लिखूँ	44
दैनिक जीवन में विज्ञान : एक दार्शनिक दृष्टी	45-46
भीतर का बसेरा	46
औषधीय पौधा	47-48
डिजिटल साक्षरता एवं नशामुक्ति	49-51
राष्ट्रीय सेवा योजना में मेरा अनुभव	52-53
शिक्षा और जीवन	54-56
अर्थशास्त्र विभाग का प्रतिवेदन	57-58
क्षेत्र अनुभव और सामाजिक यथार्थ : सामाजिक सर्वेक्षण के सन्दर्भ में	59-60
वाणिज्य : सपनो का विज्ञान	61
मैं अश्वत्थामा	62
देश आजाद तो है पर आवाज गुलाम है	63
बड़त आधुनिकता के दौर	63-64
छत्तीसगढ़ के माटी के महिमा	65
सोयाबीन : खिलाड़ियों के पोषण के लिए बेहतर उपाय	66-67
ग्रंथालय : महाविद्यालय का हृदय स्थल	68
रेडक्रॉस सोसाइटी / रेड रिबन क्लब	69-70

शहीद दुर्वासा निषाद : एक परिचय

दुर्वासा लाल निषाद जी का जन्म 1 अप्रैल 1975 को ग्राम देवरी में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मुनीलाल निषाद और माता का नाम श्रीमती बोधनी बाई निषाद है । दुर्वासा लाल निषाद जी तीन भाई और एक बहन में सबसे बड़े थे। इनकी प्राथमिक शिक्षा गृहग्राम शासकीय प्रा. शा. देवरी में हुई। पूर्व माध्यमिक शाला एवं उच्चतर माध्यमिक की पढ़ाई विद्युत नगर भिलाई से किया। ग्यारहवी उत्तीर्ण करने के बाद कक्षा बारहवी में प्रवेश लिया था, इसी बीच 28 दिसम्बर 1993 में कक्षा बारहवीं की पढ़ाई छोड़कर थल सेना में भर्ती हुये।

छः माह बाद उन्होंने बेसिक प्रशिक्षण बिहार में प्राप्त किया और छः माह का तकनीकी प्रशिक्षण वही पर ही किया। सालभर प्रशिक्षण के बाद जबलपुर में कुछ दिन सेवा देने के बाद सीधा पठानकोट पोस्टिंग हो गई। दुर्वासा लाल निषाद जी ने चार साल तक देश को अपनी सेवाएं दी । इसी बीच भारत- पाकिस्तान के लद्दाख क्षेत्र कारगिल में युद्ध छिड़ गया। आप सेना में वाहन चालक थे, और सैनिको के लिए रसद-सामग्री के साथ अन्य जरूरी सामान पहुंचाने के मिशन पर कार्य करते थे।

वह दिन 4 दिसम्बर 1998 का था, दुर्वासा लाल अपने एक साथी के साथ रसद सामग्री पहुंचाकर अपने कैंप आ रहे थे कि भारत पाकिस्तान लद्दाख क्षेत्र की सीमा पर पाकिस्तानी सैनिक हथियार बंद ऊँचे पहाड़ी पर घात लगाये बैठे थे, जिन्होंने पहाड़ के नीचे भारत-सीमा पर चलती गाड़ी में ऊपर से लांचर बम से हमला किया, जिनमें उनके एक साथी सहित दुर्वासा लाल शहादत को प्राप्त हुए। देश सेवा करते-करते उन्होंने वीरगति को प्राप्त किया ।

गाँव देवरी जो अपने वीर बेटे शहीद दुर्वासा लाल निषाद के पराक्रम के कारण चर्चित और वंदित है । श्री मुनिलाल निषाद जी ने देवरी ग्राम में अपने शहीद पुत्र दुर्वासा लाल निषाद के नाम का एक शहीद स्मारक बनवाया , यह मूर्ति रायपुर के माटी मंथन द्वारा निर्मित है ।

सन 2000 से प्रतिवर्ष 4 सितम्बर को ग्राम देवरी में शहीद मेला का आयोजन संभागीय भूतपूर्व सैनिक कल्याण संघ, गाँव के सरपंच एवं शहीद परिवार करते आ रहे है, जिनका व्यय ग्राम पंचायत देवरी व शहीद पिता द्वारा वहन किया जाता है, इस दिन शिक्षक सम्मान, वयोवृद्ध सम्मान में साल एवं श्री फल प्रदान किया जाता है, इस कार्यक्रम में ग्रा.प. एवं संभागीय भूतपूर्व सैनिक कल्याण संघ लोगों के साथ, आसपास के शहीद के परिजन एवं ग्रामीणजन भारी संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम में महती सहयोग प्रदान करते हैं।

शहीद दुर्वासा लाल निषाद के शहादत को सम्मान देते हुए छतीसगढ़ शासन ने देवरी ग्राम के प्राथमिक शाला एव शासकीय महाविद्यालय अर्जुंदा का नामकरण शहीद दुर्वासा लाल निषाद के नाम पर किया ।

|| शहीद दुर्वासा लाल निषाद के शहादत को शत शत नमन ||

कुंवरसिंह निषाद

विधायक
गुण्डरदेही, विधानसभा क्षेत्र 61

नगर व पोस्ट - अर्जुन्दा
जिला - बालोद (छ.ग.)
पिन नं. - 491225
मोबाईल : 9977861910
Email : mlagunderdehi2018@gmail.com

पत्र क्रमांक Q/VIPSELF/47/2026

दिनांक 13.02.2026

"शुभकामना सन्देश"

अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि, शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुदा, जिला बालोद द्वारा महाविद्यालय पत्रिका **'नवप्रवाह'** का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करेगी, बल्कि शिक्षा, संस्कृति एवं सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र में महाविद्यालय की विशिष्ट पहचान भी स्थापित करेगी। **"नवप्रवाह'** के माध्यम से छात्र-छात्राओं के विविध रचनात्मक एवं शैक्षणिक क्रियाकलापों का संकलन निश्चित रूप से प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा। विशेष रूप से यह पत्रिका महिला शिक्षा एवं सशक्तीकरण के उद्देश्य को समर्पित होकर समाज में सकारात्मक संदेश प्रसारित करेगी। महाविद्यालय परिवार के समस्त प्राध्यापकगण, छात्र-छात्राएँ एवं संपादकीय मंडल को इस सराहनीय पहल के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि 'नवप्रवाह' निरंतर प्रगति के नए आयाम स्थापित करे और ज्ञान, विचार एवं सृजन की अविरल धारा के रूप में प्रवाहित होती रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ .....

दिनांक 13.02.2026

(कुंवर सिंह निषाद)
विधायक
गुण्डरदेही, विधानसभा क्षेत्र क्र. 61

प्रो. (डॉ.) संजय तिवारी
कुलपति
पीएच.डी., यूएस फुलब्राइट फेलो, अकादमिक फैलो (कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय)
एफ-यूके आईई आर आई, एफ-आई.ई.ई.ई., एफ-आई.ई.टी.ई. चार्टर्ड इंजीनियर (भारत)
सीनियर एसोसिएट - आई.सी.टी.पी. (इटली), फैलो - इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (भारत)
प्रमाणित प्रबंधन नवप्रवर्तक - आजीवन सदस्य (यू.के.)

Prof. (Dr.) Sanjay Tiwari
Vice-Chancellor
Ph.D., US Fullbright Fellow, Academic Fellow (Cambridge University)
F-UKIERI, F-IEEE, F-IETE, Chartered Engineer (India)
Senior Associate - ICTP (Italy), Fellow - Institution of Engineers (India)
Certified Management Innovator - Life Member (UK)

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय
रायपुर नाका / पोटियाकला, दुर्ग, छत्तीसगढ़ - 491001, भारत
HEMCHAND YADAV VISHWAVIDYALAYA
Raipur Naka / Potiakala, Durg, Chhattisgarh - 491001, India

क्र. 184 / कुलपति सचिवालय / 2026
दुर्ग, दिनांक : 13 / 02 / 2026

!! शुभकामना संदेश !!

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय, अर्जुन्दा द्वारा अकादमिक सत्र 2025–2026 में महाविद्यालय पत्रिका **"नवप्रवाह"** का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। विशेष रूप से यह प्रसन्नता का विषय है कि यह अंक छत्तीसगढ़ राज्य की रजत जयंती (25वीं वर्षगांठ) के अवसर पर विशेष संस्करण के रूप में प्रकाशित हो रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिकाएँ विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती हैं। वे न केवल साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करती हैं, बल्कि चिंतन, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी प्रोत्साहित करती हैं। "नवप्रवाह" अपने नाम के अनुरूप ज्ञान, विचार और रचनात्मकता की एक नई धारा प्रवाहित करे – यही मेरी कामना है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों, प्राध्यापकों तथा समस्त महाविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों का उत्कृष्ट प्रतिफल सिद्ध होगी तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रेरक पहल के रूप में स्थापित होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्य, संपादकीय मंडल एवं सभी विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

सादर,

कुलपति
प्रो. (डॉ.) संजय तिवारी
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय,
दुर्ग, (छ.ग.)

Mob : 9424225771, 7000200750, **Tel** : 0788-2359800, **Email** : drsanjaytiwari@gmail.com, vc.durguniversity@gmail.com, vicechancellor@durguniversity.ac.in
Website : https://www.durguniversity.ac.in

शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुन्दा जिला बालोद(छ.ग.)

प्रणेश जैन
अध्यक्ष
नगर पंचायत अर्जुन्दा, जिला-बालोद (छ. ग.)

निवास का पता :-
वार्ड क्रमांक 14. महात्मा गाँधी वार्ड
नगर अर्जुन्दा, जिला–बालोद
मोबाईल नं. – 9425591195,6261548455

//संदेश//

हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि शहीद दुर्वासाा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुन्दा, जिला–बालोद, महाविद्यालय पत्रिका **"नवप्रवाह"** का प्रकाशन करने जा रहा है। महाविद्यालय परिवार को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

ऐसी ज्ञानवर्धक पत्रिका के प्रकाशन से छात्र–छात्राओं में नई जागृति आती है एवं ऊर्जा का संचार होता है। निश्चित ही समस्त छात्र–छात्राएँ लाभान्वित होंगे।

इन्ही भावनाओं के साथ उज्जवल भविष्य की शुभकामना।

प्रणेश जैन
(अध्यक्ष)
नगर पंचायत अर्जुन्दा,
जिला–बालोद (छ.ग.)

शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुन्दा जिला बालोद(छ.ग.)

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

(पूर्व नाम-दुर्ग विश्वविद्यालय, दुर्ग)

(छत्तीसगढ़ शासन के अधिनियम क्र. 16/2015 द्वारा स्थापित)

Email.-registrar@durguniversity.ac.in Website :- www.durguniversity.ac.in Phone No. 0788-2359100

दुर्ग, दिनांक 14-02-2026

//शुभकामना संदेश//

प्रसन्नता का विषय है कि **शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय, अर्जुन्दा, बालोद** (छ.ग.) द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य की रजत जयंती (25वीं वर्षगाठ) के अवसर पर विशेष संस्करण के रूप में ''**नवप्रवाह**'' पत्रिका के प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है कि यह पत्रिका महाविद्यालयीन छात्रों एवं शिक्षकों की शैक्षणिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक गतिविधियों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित .....

कुलसचिव
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुंदा, जिला - बालोद, महाविद्यालय पत्रिका 'नवप्रवाह' का प्रकाशन करने जा रहा है।

पत्रिका के प्रकाशन से छात्र–छात्राओं के मानसिक स्तर में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। इससे छात्र–छात्राएं ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज लाभान्वित होंगा ।

महाविद्यालय के उज्जवल भविष्य की कामनाओ के साथ

(सूर्यकान्त गजेंद्र)
अध्यक्ष
जनभागीदारी समिति
शहीद दुर्वाशा निषाद
शासकीय महाविद्यालय
अर्जुन्दा जिला– बालोद (छ.ग.)

प्राचार्य की कलम से . . .

प्रिय पाठकों,

मुझे अपने कॉलेज की पत्रिका 'नवप्रवाह' के प्रकाशन को देखकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर मैं सभी संकाय सदस्यों और छात्रों को, विशेष रूप से उन सभी को बधाई देना चाहती हूँ जिन्होंने इस सपने को साकार करने में सक्रिय भूमिका निभाई है। पत्रिका में अपना अमूल्य योगदान देने वाले सभी लोगों को मेरा विशेष धन्यवाद, जिन्होंने अपने लेख, कविताएँ, संस्मरण और साक्षात्कार साझा किए हैं।

कॉलेज पत्रिकाएँ युवाओं को अपनी रचनात्मकता के माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती हैं। नवप्रवाह का उद्देश्य कॉलेज जीवन का दर्पण बनना और हमारे कॉलेज की शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक पाठ्येत्तर गतिविधियों को अनूठे ढंग से प्रतिबिंबित करना है। इसका उद्देश्य नए विचारों को जन्म देना और संकाय सदस्यों और छात्रों दोनों को नए क्षितिज तलाशने के लिए प्रोत्साहित करना है।

'नवप्रवाह' छात्रों को अपनी कहानियों, कविताओं, संस्मरणों, यात्रा वृत्तांतों और कला के माध्यम से खुलकर बोलने के लिए प्रोत्साहित करेगा। यह उनके सभी रचनात्मक विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनेगा और उन्हें पढ़ने-लिखने के लिए भी प्रेरित करेगा। छात्रों को शिक्षण और गैर-शिक्षण स्टाफ सदस्यों द्वारा योगदान किए गए विचारोत्तेजक लेखों और रचनात्मक लेखन से भी लाभ होगा।

'नवप्रवाह' न केवल शिक्षा, मनोरंजन और जानकारी प्रदान करेगा, बल्कि नए विचारों और पुराने ज्ञान को आपस में जोड़ने के लिए एक मंच भी प्रदान करेगा।

मुझे आशा है कि यह पहल सभी को समृद्ध करता रहेगा...

प्राचार्य
शहीद दुर्वासा निषाद
शासकीय महाविद्यालय अर्जुन्दा
जिला बालोद (छ.ग.)

महाविद्यालय एक नज़र

सत्र 2025-26 में महाविद्यालय के लिए विकास, नवाचार एवं शैक्षणिक सक्रियता का उल्लेखनीय वर्ष रहा। इस अवधि में महाविद्यालय द्वारा अधोसंरचना विकास, छात्र-सुविधा विस्तार, आधुनिक शिक्षण पद्धति के क्रियान्वयन तथा सह-शैक्षणिक गतिविधियों को विशेष प्राथमिकता प्रदान की गई। महाविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों से अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की गई, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:-

1. अधोसंरचना विकास एवं परिसर सुधार-

- महाविद्यालय परिसर में शहीद उद्यान एवं शहीद प्रतिमा का अनावरण किया गया, जिससे परिसर में राष्ट्रभावना एवं प्रेरणादायी वातावरण का सृजन हुआ।
- विद्यार्थियों की सुविधा हेतु फीस काउंटर के आसपास के क्षेत्र का समतलीकरण कराया गया ।
- छात्र-छात्राओं के बैठने की समुचित व्यवस्था के लिए एयरपोर्ट चेयर स्थापित की गई।
- शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु निरंतर आर.ओ. जल व्यवस्था संचालित की गई।
- पी.जी.डी.सी.ए. (स्ववित्तीय) अंतर्गत इंटरएक्टिव पैनल बोर्ड स्थापित कर आधुनिक शिक्षण पद्धति को प्रोत्साहन प्रदान किया गया।
- नये बिल्डींग में एवं बाहर सी.सी.टी.वी. कैमरा एवं WIFI की सुविधा उपलब्ध है।
- वनस्पति विभाग द्वारा नक्षत्र वाटिका का निर्माण तथा नवग्रह संकल्पना आधारित नवग्रह वाटिका का निर्माण।
- विषिष्ट गुण वाले औषधीय पौधों का संकलन कर वनस्पति उद्यान (Botanical garden) का निर्माण।

2. शैक्षणिक प्रगति -

- NEP के सफलता पूर्वक संचालन के अतिरिक्त दो National Conferences ओर दो National Workshop आर्गेनाईस किये गये जिसमें एक CG Cost द्वारा Sponsored तथा IKS पर आधारित था।

- कौशल विकास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम नांदी फाउंडेशन के सहयोग से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास हेतु पर्सनालिटी डेवलपमेंट कक्षाएँ प्रारंभ की गई।
- महाविद्यालय के 36 विद्यार्थियों के समूह का केक निर्माण प्रशिक्षण पंजाब नेशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (RSETI) लाभाण्डी रायपुर (C.G.) के सहयोग से संपन्न हुआ।
- जंतु विज्ञान विषय के विद्यार्थियों का शैक्षणिक फील्ड ट्रिप नवा रायपुर में आयोजित किया गया।
- Artistic Vision के साथ एम.ओ.यू. के अंतर्गत विद्यार्थियों को 30 दिवसीय ग्राफिक्स डिसाइनिंग का कोर्स कराया गया।
- एम.ओ.यू. के अंतर्गत विद्यार्थियों को गोविंदा फार्म का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया।
- विभागवार समय-समय पर विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित कर विषयाधारित अतिथि व्याख्यान आयोजित किए गए।
- स्ववित्तीय मद से योगा प्रांरभ किया जाना है।
- विद्यार्थियों के लिए विषयवार NET/SET की कक्षाएं संचालित की जाती है।

3. सांस्कृतिक एवं नैतिक गतिविधियाँ-

- मेन्टल हेल्थ पर रेडक्रॉस द्वारा हार्टफूलनेस मेडिटेषन पर कार्यक्रम करवाया गया।
- वर्ष 2024 में महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु कई महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पहल की गई। संस्थान में ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की प्रतिमा की स्थापना कर एक सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण निर्मित किया गया। साथ ही, क्षेत्रीय कला एवं विरासत के संरक्षण हेतु तीज एवं दीपावली उत्सव जैसे कार्यक्रमों का गरिमामय आयोजन हुआ।
- ‘‘एक पेड़ माँ के नाम‘‘ पर महाविद्यालय परिसर में 101 पेड़ लगवाये गये।

- महाविद्यालय द्वारा एक त्रैमासिक न्यूजलेटर प्रकाशित किया जाता है, जिसे आधिकारिक वेबसाइट पर अपलोड किया जाता है। इस पत्रिका में कॉलेज की समस्त शैक्षणिक, सांस्कृतिक और खेलकूद गतिविधियों का विस्तृत विवरण उपलब्ध रहता है।
- वार्षिक कॉलेज मैगजिन नवप्रवाह प्रकाषित किया गया है।

4. पुस्तकालय सुदृढ़ीकरण -

- अध्ययन-अध्यापन को समृद्ध बनाने हेतु महाविद्यालय पुस्तकालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप लगभग 50 नवीन पुस्तकों व साहित्य के क्षेत्र में वर्तमान में प्रचलित साहित्यिक पुस्तकों व पत्रिकाओं का क्रय किया गया।

5. भावी योजनाएँ -

- महाविद्यालय भविष्य में निम्न विकास कार्यों के लिए निरंतर प्रयासरत है।
- मुख्य प्रवेश द्वार का निर्माण सम्पूर्ण परिसर में ।
- सीसीटीवी कैमरा स्थापना ।
- पृथक ग्रंथालय भवन की स्थापना।
- डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना।
- परिसर सौंदर्यीकरण एवं अधोसंरचना विस्तार।
- खेल प्रशिक्षण हेतु मैदान समतलीकरण।
- बैडमिंटन एवं टेनिस कोर्ट का निर्माणनवीन भवन पर अतिरिक्त कक्ष निर्माण।
- जैव विविधता के अनुरूप जीरो कार्बन फुटप्रिंट की दिशा में काय।
- सौर ऊर्जा पैनल स्थापना।
- रिक्त पदों पर नियमित प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक, प्रयोगशाला तकनीशियन, प्रयोगशाला परिचालक एवं कार्यालयीन कर्मचारियों की पदस्थापना हेतु प्रयास।
- भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत आगामी सत्र से स्ववित्तीय योजना में योग अध्ययन प्रारंभ करना।
- नियमित छात्र-छात्राओं हेतु पृथक छात्रावास की शासन स्तर पर मांग।

श्री त्रिदेव
सहा. प्राध्यापक वाणिज्य

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग के प्रावीण्य सूची मे उत्कृष्ट प्रदर्शन वाले छात्र - छात्राए

कु अंजली
एम.ए. अर्थशास्त्र
चतुर्थ स्थान 2024-25

कु धनेश्वरी
एम.ए. समाजशास्त्र
चतुर्थ स्थान 2024-25

कु किरण निषाद
एम.ए. समाजशास्त्र
तृतीय स्थान 2023-24

कु मोनिका पटेल
एम.ए. समाजशास्त्र
छठवां स्थान 2023-24

कु शालिनी साहू
एम.ए. समाजशास्त्र
आठवां स्थान 2023-24

उपलब्धियाँ

पायल निषाद
दक्षिण-पूर्व क्षेत्रीय जोन उत्सव
2024 रंगोली प्रतियोगिता

हेमा मंडावी
अखिल भारतीय अंतर-विश्वविद्यालय
भारोत्तोलन प्रतियोगिता

रागिनी साहू
छत्तीसगढ़ टीम में कोच व राष्ट्रीय स्तर
पर vovinam Championship का
रेफरशिप

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मातृत्व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

पोषक विद्यालय संपर्क अभियान

पारंपरिक कढ़ाई पर 15 दिवसीय कार्यशाला

योगा और मेडिटेशन कार्यशाला

उत्तरदान : ज्ञान, कौशल एवं उत्तरदायित्व हस्तांतरण की जीवंत शैक्षणिक परंपरा

भारतीय शिक्षा परंपरा में ज्ञानार्जन की प्रक्रिया सदैव समाजोपयोगिता एवं उत्तरदायित्व बोध से जुड़ी रही है। शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित न होकर सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों एवं आत्मनिर्भरता का विकास करना भी है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु महाविद्यालय में "उत्तरदान" एक अभिनव एवं प्रेरणादायी पहल के रूप में संचालित किया जा रहा है, जो विद्यार्थियों के मध्य ज्ञान, कौशल एवं उत्तरदायित्व के हस्तांतरण की सतत प्रक्रिया को सुदृढ़ करता है।

"उत्तरदान" के अंतर्गत वरिष्ठ छात्र-छात्राओं द्वारा कनिष्ठ विद्यार्थियों को विभिन्न सृजनात्मक एवं व्यवहारिक विधाओं में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रशिक्षण प्रक्रिया में सीनियर विद्यार्थियों द्वारा जूनियर छात्रों को टिकुली कला, मंडला कला, रेजिन आर्ट सहित अन्य कलात्मक एवं हस्तशिल्प आधारित गतिविधियों का मार्गदर्शन दिया जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मकता, एकाग्रता, सौंदर्यबोध एवं नवाचार की भावना का विकास होता है, साथ ही वे व्यावहारिक एवं रोजगारोन्मुखी कौशलों से भी समृद्ध होते हैं।

इस उत्तरदान परंपरा को और अधिक सशक्त बनाने के उद्देश्य से महाविद्यालय में "कौशल विकास केंद्र" का शुभारंभ किया गया है। यह केंद्र प्रशिक्षण की निरंतरता सुनिश्चित करते हुए अधिगम की श्रृंखला को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस प्रकार सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया एक सतत एवं सहभागी मॉडल के रूप में विकसित हो रही है, जिससे ज्ञान का प्रवाह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रभावी रूप में संचरित होता है।

कौशल विकास केंद्र के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, सहयोगात्मक अधिगम, आत्मनिर्भरता एवं उद्यमिता जैसे महत्वपूर्ण गुणों का विकास हो रहा है।

ग्रामीण भारत में निहित पारंपरिक ज्ञान एवं कौशल को मुख्यधारा के व्यवसाय एवं रोजगार से जोड़ने में विशेष रूप से गांव की महिलाओं का विशेष योगदान रहेगा। “उत्तरदान” विद्यार्थियों को स्थानीय कला, शिल्प एवं परंपरागत विधाओं से परिचित कराते हुए उन्हें स्वरोजगार के प्रति प्रेरित करता है। यह पहल भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन के साथ-साथ विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में मजबूत मंच प्रदान करेगी।

इस प्रकार महाविद्यालय में संचालित "उत्तरदान" केवल औपचारिक न होकर ज्ञान से कौशल एवं कौशल से आत्मनिर्भरता की दिशा में एक सशक्त शैक्षणिक सेतु के रूप में कार्य कर रहा है। यह वरिष्ठ एवं कनिष्ठ विद्यार्थियों के मध्य सहयोग, समर्पण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें एक सक्षम, सृजनशील एवं उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित कर रहा है।

अतः “उत्तरदान”, शिक्षा के उस आदर्श स्वरूप का प्रतीक है जिसमें ज्ञान का हस्तांतरण केवल पुस्तकीय सीमा तक सीमित न रहकर जीवनोपयोगी कौशलों के माध्यम से समाज के समग्र विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करता है।

श्रीमती दीपिका कँवर
सहा. प्राध्यापक समाजशास्त्र

चरित्र (लघुकथा)

बच्चों में प्रारंभ से ही सद्गुणों का विकास हो तभी वे दुर्गुणों से लोहा ले पायेगें, तभी उनके व्यक्तित्व में चमक पैदा हो पाएगी, इसी आधार पर वें मेधावी बन पाएंगे। विद्यार्थी परिस्थितियों के दास नहीं अपितु नियंत्रण कर्ता बने। अपने चरित्र की ऐसी बढ़िया और मजबूत नीव रखें की उस पर जीवन का बढ़िया से बढ़िया महल बनाया जा सके।

मनुष्य की सबसे बड़ी पूजी उसका चरित्र है इसकी रक्षा करे। अगर यह विगड़ा तो कुछ भी शेष न रहेगा । धन यदि लूट भी जाए तो परिश्रम द्वारा पुनः पाया जा सकता है पर यदि चरित्र बिगड़ा तो उसे किसी प्रकार भी नहीं पाया जा सकता है। इसलिए जीवन में सावधान और सतर्क रहना चाहिए। प्रयास यह रहे की जीवन में किसी प्रकार का कोई आकर्षण आपको आकर्षित न करने पाए।

यदि आपका जीवन संवेदनाओं से ओत् प्रोत रहा है और आप दोष दुर्गुणों से दूर रहे तो निश्चित मानिए आपके जीवन में उन्नति और उत्कर्ष के अवसर आते ही रहेंगे तथा आप श्रेय और सम्मान के अधिकारी रहेंगे ।

मधु सिन्हा
B.A. III YEAR

NSS और मेरा जीवन

कॉलेज में प्रवेश लेने के बाद मेरा जीवन पढ़ाई और परीक्षा तक ही सीमित था। मुझे लगता था कि एक छात्र का मुख्य उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना है। लेकिन मन में कहीं न कहीं यह सवाल रहता था कि क्या यही जीवन का अर्थ है। इसी दौरान मैं NSS से जुड़ा। शुरुआत में यह मुझे एक सामान्य गतिविधि लगी, लेकिन धीरे-धीरे इसके उद्देश्य को समझने लगा। NSS से जुड़ते समय हमें इसका MOTTO बताया गया "NOT ME BUT YOU" यानी पहले स्वयं नहीं, बल्कि दूसरों के बारे में सोचना। यह बात मेरे मन में गहराई से बैठ गई। हमें यह भी बताया गया कि NSS स्वामी विवेकानंद जी के विचारों से प्रेरित है, जहाँ सेवा को जीवन का महत्वपूर्ण मूल्य माना गया है। गाँव में जाकर सफाई अभियान करना, लोगों से बातचीत करना और बच्चों के साथ समय बिताना - इन अनुभवों ने मुझे समाज को नजदीक से समझने का अवसर दिया। एक बार एक बुजुर्ग ने कहा, बेटा, तुम लोग आते हो तो अच्छा लगता है। उस क्षण मुझे समझ आया कि नर सेवा ही नारायण सेवा है के विचार का वास्तविक अर्थ क्या है। NSS ने मुझे आत्मविश्वास दिया, लोगों के सामने अपनी बात रखना सिखाया और जिम्मेदारी का भाव विकसित किया। आज जब मैं अपने जीवन को देखता हूँ, तो महसूस करता हूँ कि NSS ने मेरी सोच और दृष्टिकोण को सकारात्मक दिशा दी है। मेरे लिए NSS केवल एक गतिविधि नहीं, "NOT ME BUT YOU" के सिद्धांत को जीवन में अपनाने का माध्यम बन गया है। जो सीख मुझे NSS से मिली, वह केवल पुस्तकों से संभव नहीं थी।

सुदर्शन साहू
M.Com. IV Semester

IDYEP Raigarh: मेरी यादगार यात्रा

"Seekhna sirf kitaabon se nahi, zindagi ke experiences se hota hai."

जब मैंने IDYEP Raigarh में हिस्सा लिया, तो मुझे लगा ये सिर्फ एक प्रोग्राम है। लेकिन यह सफर मेरे लिए सीख, दोस्ती और यादगार अनुभवों से भरा रहा। नए शहर, नए लोग और नए विचार-हर पल कुछ नया सिखा रहा था।

नई दोस्तियाँ और सांस्कृतिक अनुभवर: Raigarh में हमारे समूह को एक गाँव ले जाया गया, जहाँ हमने छत्तीसगढ़ की लोक कला और हस्तशिल्प को करीब से देखा। यह अनुभव न केवल कला की सराहना सिखाता है, बल्कि हमारी संस्कृति और परंपरा से जुड़ने का अनोखा मौका भी देता है।

साथियों के साथ सफर और टीमवर्कर: Raigarh में मिले साथी और उनकी अलग-अलग संस्कृति ने मेरी सोच को नया आयाम दिया। हम सबने मिलकर टीमवर्क की चुनौतियाँ पूरी की, विचार-विमर्श किया, और कई मस्ती भरे पल बिताए। ट्रेन में सफर करते हुए हम सबने गाने गाए, अनुभव शेयर किए और दोस्ती के ऐसे पल जिए जो हमेशा याद रहेंगे। यही छोटे-छोटे अनुभव इस यात्रा को खास बनाते हैं।

सीख और आत्मविश्वासर: इस यात्रा ने मुझे सिखाया कि डर और चुनौती को स्वीकार करना ही खुद को मजबूत बनाता है। बातचीत, सहयोग और नए Perspectives को समझना हमारी Growth के लिए कितना जरूरी है। अब मैं खुद को ज्यादा Confident, Independent और Open-minded महसूस करता हूँ।

एक अनुभव, अनगिनत यादेंर: IDYEP Raigarh सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं था-यह मेरे लिए Growth सीख और दोस्ती का खजाना था। गाँव में कला देखना, साथी छात्रों के साथ Brainstorming ट्रेन के सफर की मस्ती हर पल ने मुझे जीवन के नए रंग दिखाए। यह अनुभव हमेशा मेरी यादों में ताजा रहेगा।

शुभम देशमुख
(M.Com. IV Semsester)

वाणिज्य : भविष्य की दिशा

संख्याओं में बँधी नहीं
वाणिज्य की यह दुनिया,
सोच-समझ और साहस से
चलती है इसकी दुनिया।
लेन-देन के हर पल में
छुपा है विश्वास का भाव,
ईमानदारी की नींव पर
टिकता है हर व्यवसाय।
माँग, पूर्ति और मूल्य से
बाजार की भाषा बनती,
सही निर्णय की शक्ति से
सफलता राहें चुनती।
जोखिमों से घबराता नहीं
वाणिज्य का हर विद्यार्थी,
क्योंकि संघर्ष की आग में
निखरती है काबिलियत भारी।

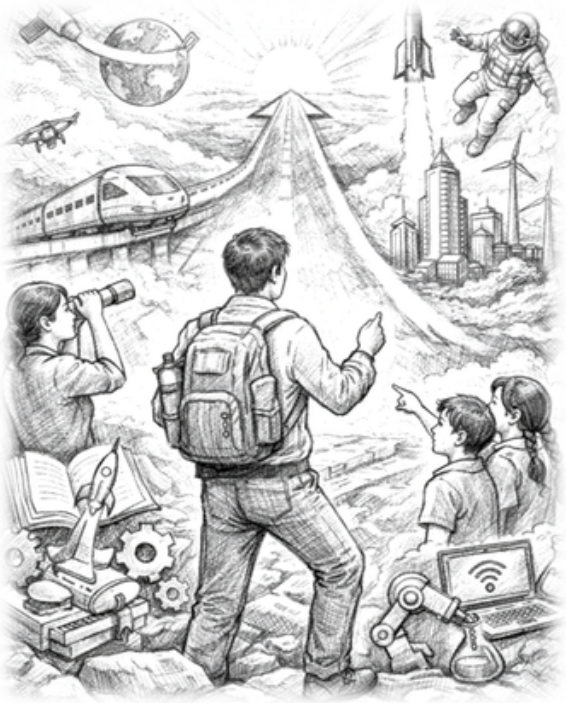

यह विषय सिखाता हमको
नियोजन और अनुशासन,
आज की समझ से ही
कल का होता निर्माण।
वाणिज्य है ज्ञान का सेतु
उद्योगों की पहचान,
इसके पथ पर चलकर
सँवरता है नया इंसान।

डॉ. कुसुम देवाँगन
अतिथि सहायक प्राध्यापक
(वाणिज्य)

बछरू ढीला गे

आज हमर बछरू ढीला गे,
अपन माई के कासड़ा ला तोड़ के
दुनिया देखे बर अगवागे
आज हमर बछरू ढीला गे।
दूध के दाँत अभी टूटे नई रहिस
हरियर चारा देख अगवागे
आज हमर बछरू ढीला गे।
धौरी धौरी बछरू आए,
देख एके दिन मा मईलागे
आज हमर बछरू ढीला गे।
नानपन मा सिरतोन
खेले खाए के सुध रथे
दाई के छैईहा झन छूटे
इहि बात के बुध रथे
फेर जब अपन चेत बाढीस ता,
सबों दुनिया रद्दा भुलागे
आज हमर बछरू ढीला गे।

घनश्याम
B.Sc. III

शिक्षक

शिक्षक वही है,
जो जीना सीखा दे।
आपसे अपनी,
पहचान करा दे।
मुश्किलों से लड़कर,
आगे बढ़ जाओ तुम।
वह तुम्हे इतना ईमानदार बना दे,
तराश दे हीरे की तरह तुमको,
दुनिया के रास्तों पर
चलना सीखा दे ।
शिक्षक वहीं है,
जो जीना सिखा सीखा दे ।

वंदना गजेन्द्र
B.A. III

माँ

माँ मूरत है ममता की,
सादगी की समता की ।
माँ गंगा जैसी पावन है,
स्नेह का सावन है।
भोली है. मीठी गोली है,
मिसरी सी बोली है।
आरती जैसी सहती है,
कुछ भी न कहती है ।
इसीलिए दुनिया में ,
माँ का बड़ा नाम है।
माँ मेरी माँ तुझे,
शत्-शत् प्रणाम है।

वंदना गजेन्द्र B.A. III

बेटी

कहने को वरदान है बेटी
अनचाही संतान है बेटी,
कपड़ा, पैसा, दान समझ कर
कर दी जाती दान है बेटी।
खूब ठहाके लाती बेटी
बुझती -सी मुस्कान है बेटी,
लेना-देना दो बापों का, हो
जाती कुर्बान है बेटी।
कुछ नहीं है घर में लेकिन
घर की इज्जत मान है बेटी,
सास कहे है गैर की जाई
माँ के घर मेहमान है बेटी।

वंदना गजेन्द्र B.A. III

भारत की विरासतें

है नहीं ये नवीन रचनाएँ
पुरातन की गाथा सुनाता हूँ
संस्कृति से भरी इस भूमि पर
विरासत की बात बताता हूँ।
जहां सुबह हो रामायण सें
और गीता से शाम हो
दुनिया भर में वहां-वहां
मेरा हिन्दुस्तान हो ।
आयुर्वेद का जन्म यहां पर
योग सिद्धि का मान है
चारों वेद की अनंत ज्ञान
जो विश्व में महान है।
शुन्य का अविष्कार यही पर
वीरों का सम्मान हुआ
दशमलव का उत्थान यही पर
वैदिक गणित में आसमान हुआ।

जन्म यही पर शिवाजी का
मणिकर्णिका से अभिमान था
नालंदा का विस्तृत ज्ञान
गूगल से महान था ।
विरासत से परिपूर्ण यह भूमि
मेरे भारत की पहचान हो
दुनिया भर में वहां-वहां
मेरा हिन्दुस्तान हो।

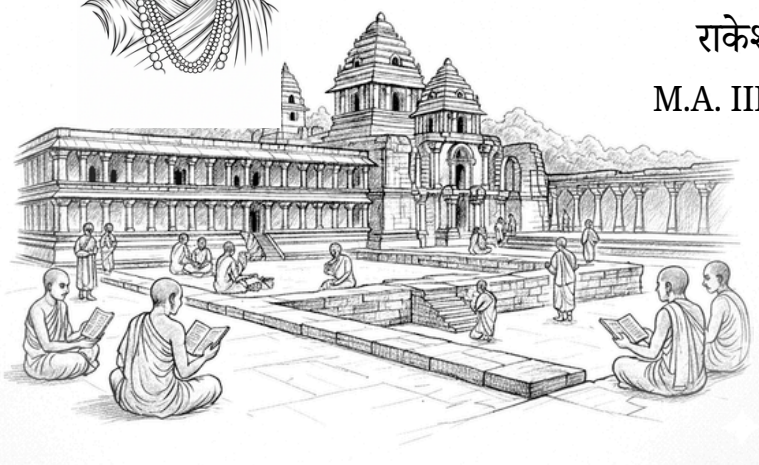

राकेश कुम्भकार
M.A. III (Sociology)

कलयुग की गौमाता

सुबह होती है . . .
सड़क पर एक गाय खड़ी है
न मंदिर में, न गौशाला में
बस ट्रैफिक और शोर के बीच ।
उसकी आँखों में कोई सवाल नहीं,
बस इंतजार है।
शायद उसी इंसान का
जिसने कभी उसे 'माँ' कहा था ।
आज वह भूखी है,
फिर भी किसी से कुछ माँगती नहीं।
कूड़े के ढेर में झाँकती है,
क्योंकि कलयुग ने उसके हिस्से में
यही रखा है।
प्लास्तिक, दर्द और तिरस्कार ।

जिस देह से कभी दूध बहा,
आज वहीं देह बोझ बन गई।
दूध सूखा तो रिश्ते सूख गए,
और "गौमाता"
एक अनचाहा सच बनकर
सड़कों पर छोड़ दी गई।
वह रोती नहीं,
क्योंकि उसे रोना नहीं आता ।
वह चिल्लाती नहीं,
क्योंकि उसकी आवाज
हमने कब की अनसुनी कर दी।
कलयुग यही है-
जहाँ गाय चुपचाप मरती है
और इंसान खुद को अब भी
धर्मात्मा कहता है।

हर्षित B.Sc. III

वित्तीय जागरूकता आज के युवाओं की जरूरत

आज के आधुनिक एवं प्रतिस्पर्धी युग में केवल शिक्षा प्राप्त करना ही उससे जीवकोपार्जन हेतु धन कमाना ही पर्याप्त नहीं है अपितु धन का सही प्रबन्धन करना भी उतना ही आवश्यक है। इसी क्षमता को ही वित्तीय साक्षरता कहा जाता है। युवाओं में वित्तीय साक्षरता का अर्थ-आय व्यय, बचत, निवेश और कर्ज से जुड़े निर्णय समझदारी से लेना है। आर्थिक सशक्त समाज के निर्माण के लिए युवाओं का वित्तीय रूप से साक्षर होना अत्यत आवश्यक है। वर्तमान समय में युवावर्ग जल्दी पैसे कमाने और खर्च करने की दुनिया में प्रवेश कर रहा है। लेकिन सही समझ के अभाव में गलत निर्णय लेते है जैसे अनावश्यक खर्च, अधिक कर्ज लेना व बचत न करने की प्रवृत्ति। यदि युवाओं को कम उम्र से ही पैसे के महत्व और उसके प्रयोग की शिक्षा दी जाए तो वह अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकते है। वित्तीय साक्षरता युवाओं को बचत करने की आदत सिखाती है। यह उन्हें यह समझने में मदद करती है, कि आय का एक हिस्सा भविष्य के लिए बचाना क्यों जरूरी है साथ ही आवश्यकता व इच्छा में अंतर को समझाती है। आज अधिकांश युवा इनके बीच अंतर नहीं समझ पा रहे है और कर्ज लेकर अपनी इच्छाओं को पूरी कर रहे जो कि अनंत है जिसमें आय का एक बड़ा हिस्सा कर्ज व उसके ब्याज के भुगतान करने में खर्च हो रहा है। इसके अलावा निवेश की सही जानकारी होने पर वह अपने पैसो को बढ़ाने के अवसर प्रदान करती है जैसे बैंक में पैसे जमा करना बीमा करवाना म्यूच्यलफण्ड, अन्य निवेश योजनाओं में बचत जमा करना आदि शामिल है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि वित्तीय साक्षरता युवाओं को भविष्य के प्रति सजग व आत्मनिर्भर बनाती है। यह केवल व्यक्तिगत जीवन को बेहतर
ही बनाती है अपितु सम्पूर्ण समाज के आर्थिक प्रगति में भी योगदान प्रदान करती है। इसलिए युवाओं में वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

प्रभा शर्मा
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)

बच्चो भविष्य क्या है ?

बच्चों भविष्य क्या है ?
कहाँ उलझे हो तुम
बूरे संगत में पड़ रहे हो
जीवन, हो रहा बर्बाद।
बच्चों तुम क्या कर रहे हो
हो रहे पुस्तक से दूर
समा रही बूरी आदतें।
बचपना, हो रहा खत्म
जकड़ रहा तुम्हे मोबाईल
हो रहा तन-मन खराब
छिन रहा बचपना तुम्हारा
भविष्य, हो रहा खराब।
जिस गली-खोर में खेला करते
आज वही गली - सुना पड़ा

कहाँ गया बचपना तुम्हारा
स्वास्थ्य, हो रहा खराब ।
जकड़ रहा तुम्हे TV, मोबाईल
खतम हो रहा आत्मविश्वास
बिगड़ रहा मन में विचार
अंशांति, फैल रहा मन में
भाग रहे परिश्रम ये से दूर
आत्मबल घट रहा तुम्हारा
भटक रहे हो इस दूनिया में
बुरी आदत से भागो।
तुम्ही हो भविष्य हमारा
जागों बच्चों जागों ।

डुमेश कुमार
B.Sc. III (Bio)

कलयुग में स्त्री व्यथा

मैं स्त्री हूँ, कोई वस्त्र नहीं
किसी के घर की रोशनी हूँ
कोई वस्तु नहीं
चंद कागज के टुकड़ों के खातिर
मेरा अस्तित्व ना मिटने दो
मुझे भी हक़ हैं जीने का...
ये हक़ मुझसे ना छीनो...
मत करो मुझे इतना विवश तुम
खुद को ही खुद से खत्म कर डालू मैं
मुझे भी हक हैं जीने का
ये हक़ मुझ से ना छीनो...
एक लड़की जब
नए घर जाती है
क्या - क्या सपने वो सजाती है
उन, सपनों को तुम ना तोड़ो...
गैरो सा मुंह ना मोड़ो
उन सपनों को तुम साकार करो
मुझे भी हक़ है जीने का
ये हक़ मुझसे न छीनों
जीवन के इस नये बंधन की...
दिल से तुम स्वीकार करो
पैसों रुपयों के लालच में
मेरा जीवन ना तुम
बरबाद करो
मुझे भी हक है, जीने का
ये हक़ मुझसे न छीनों...

दीपिका
B.Sc. III (Bio)

कविता की संवेदना

कितना जरूरी है कविता लिखना
जरूरी ही नहीं अनिवार्य
होना चाहिए
कुछ भी बनने से पहले
बनना होगा कवि
जो देख पाए दर्द को
और कर सके महसूस
हंसने के पीछे का दर्द
रोने के पीछे का दर्द
दर्द के पीछे का सच
सच के पीछे का झूठ
झूठ बोलने के पीछे का ड़र
औरत बनने के पीछे का दर्द
बाढ़ और सूखे मे बर्बाद होती
फसलों से
रोते किसान के आंसू
का दर्द
दिन भर जी तोड़ मेहनत
करने के बाद
रोजी-दिहाड़ी मजदूर को
मजदूरी ना मिलने का दर्द
किसी बच्चे के चाय की
दुकान पर जूठे बर्तन
धोने और बचपन छिन
जाने का दर्द
जवान बेरोजगार का दर्द
बुढ़ापे में अकेला रह जाने और
किसी से कुछ भी न
कह पाने का दर्द
घर पर रह गई महिलाओं का
घर की ही चक्की मे पिस
जाने का दर्द
प्रेमी द्वारा ठगी गई
लड़की का दर्द
कविता सिखाती है इनके
दुख को समझ पाने की संवेदना
कविता जैसी संवेदना है
अनिवार्य जो सिखा सके
बात करने का सलीका

समझा सके सबके मनोभाव
कुछ भी होने का मकसद
कुछ भी ना कहने का मकसद
कुछ भी करने का मकसद

बहुत कुछ को बिना समेटे छोड़
देने का साहस बहुत कुछ
बिखरे हुए को सवार
देने का जज्बा

डॉ प्रदीप कुमार प्रजापति
(सहायक प्राध्यापक-हिन्दी)

नारी: एक शक्ति एक पहचान

नारी है सृष्टि का आधार ,
नारी के बिन अधूरा संसार।
ममता की मूरत, प्रेम की धार,
हर रिश्ते की वो है आधार।
संघर्ष की वो एक कहानी,
हर पीड़ा पर मुस्कान पुरानी।
दर्द को सहकर भी जो हसे ,
वो नारी ही है, जो सब
कष्ट सहे।
कभी सीता, कभी दुर्गा बनती,
कभी सरस्वती, ज्ञान वो देती।

रानी लक्ष्मी,झांसी की शान,
त्याग और साहस की पहचान ।
पढ़ने दो , बढ़ने दो , आगे बढ़ाओ,
उसके सपने को भी उड़ान दिलाओ।
नारी है सशक्त, ये मानो सभी,
अबला नहीं, है वो शक्ति बड़ी।
मत रोको उसे, अब चलने दो ,
अपने सपनों को खुद चुनने दो।

वेनिका
M.A. IV Sem (Sociology)

भारत की शान

भारत की धरती पर बसी एक अनमोल जाति,
संस्कृति से भरपूर, सजीव है उनकी माटी।
गाँव - गाँव में बसी है उनकी कहानियाँ,
हर कदम में बसी है उनकी यादे पुरानी।
प्रकृति से जुड़ा, उनका जीवन हर वक्त,
आत्मनिर्भरता से होता है उनका हर व्रत।
जंगल, पहाड, नादियाँ जिनसे प्यार ,
धन्य है वे, जो रखते है प्रकृति
का ख्याल बार-बार।
संगठित है वे, कभी न अकेले,
अपने समाज में ही पाए जाते है बड़े।
नृत्य, गीत और कला में लहराए रंग,
जनजाति के दिलो में हर सपना है मस्तक।
हमें सिखाती है यह जीवन की सच्चाई ,
कहाँ है असली सुख, कहाँ है माथा की कलाई।
इनकी संस्कृति और जीवन को समझो,
इनकी धरोहर से हमारा समाज जुडे, यही कहो।
जनजाति है शक्ति, है संस्कृति का सार,
हम सबका हिस्सा, यही है उनका प्यार।

दिनेश कुमार बंजारे
M.A. IV (Sociology)

जड़कल्ला के दिन

पानी ले होगे बैर
आगी हा सुहावत हे
करो अलाव के तैयारी संगी
जड़कल्ला के दिन आवत हे ।
दु कपड़ा अऊ स्वेटर पहिरेन
तभों ले जाड़ लागत है।
चूल्हा पाट तीर बैइठे,
बबा घलो हा कापत हे।
बड़े बिहनिया घाम ल देख
तापे बर मन ललचावत हे
अभिच के चुरे भात ह घलो
थोड़कीन में जुड़ावत हे
नाहाय बर दाई हा पानी तीपोंहे
पानी ले गुंगवा उड़ावत हे . . .

अऊ ये कविता लिखईया राकेश हा
ठंड में बिना साबुन के नहावत हे . . .
मौसम घलो बईमान हे संगी
बरखा के दिन गरमावत हे
अऊ जाड़ के दिन बरसावत हे
करो अलाव के तैयारी संगी
जड़कल्ला के दिन आवत हे ।

राकेश कुमार कुंभकार
M.A. IV (Economics)

तू एक बार लड़का बनकर तो देख

लाड़ प्यार से ज्यादा जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाया
जाता है, कितनी मुस्किल से कमाते है पैसा
बचपन से यही सिखाया जाता है।
तू लड़का है तू किसी भी हाल मे रो नहीं सकता
खिलौना टूटे या दिल तू पलके भिगो नहीं सकता।
कि एक के दिल का नूर है, तू किसी
की मांग का सिंदूर है
तुझे कौन समझेगा किसे बताएगा दिनभर
थकान से चकनाचूर है तू
की तू मर्द है रो के दिखा नहीं सकता
कितना भी टूटा है दिल आँसू बहा नहीं सकता
दिन रात सुबह शाम
इन ख्वाहिशों की भट्ठी में जलकर तो देख
तू एक बार लड़का बनकर तो देख।
क्या तू देख पाएगा माता - पिता को इस उम्र में काम
करते हुए या देख पाएगा बीबी
बच्चों को अभाव में पलते हुए
तुझे कृष्ण बन प्रेम रंग सुनाना पड़ेगा
मन में बसी राधा लेकिन रुक्मणी से
व्याह रचना पड़ेगा तू अपनी ये इच्छाएं
आदर्शों का चोला पहनकर तो देख
तू एक बार लड़का बनकर तो देख।
तुझे हर घाव हर जख्म को छुपाना पड़ेगा
कुछ भी हो तुझे दुनिया के सामने मुसकुराना होगा
कितना दर्द इस दिल में इस पर हाथ रख कर तो देख
तू एक बार लड़का बनकर तो देख।

यामिनी गोयल (पूर्व छात्रा)

सोशल मीडिया : वरदान या अभिशाप

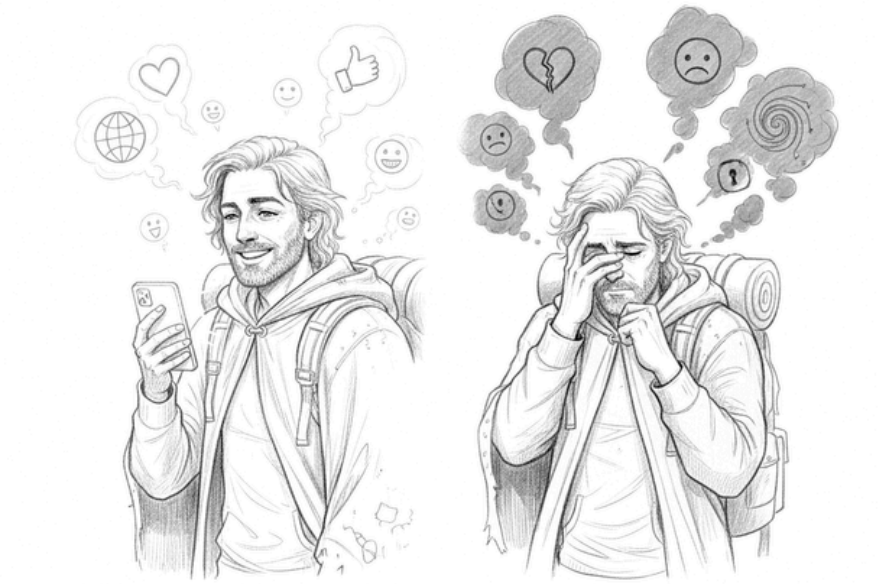

एक छोटी सी स्क्रीन में
दुनिया सिमट आई है,
अंगुलियों के एक चाल से ही
हर दूरी मिट आई है।
कहीं ज्ञान का सागर है,
कहीं हुनर की पहचान
अनसुनी आवाजों को भी
मिला उड़ने का आसमान।
पर वक्त अनजाने में
स्क्रीन पर ही ठहर जाता है,
अपनों के बीच रहते हुए भी
मन कही और चला जाता है।
दिखाने की चाह में अक्सर
सच थोड़ा पीछे रह जाता है,
तुलना की हल्की सी आहट से
सुकून भी सहम सा जाता है
वक्त चुपचाप फिसलता है
रील्स और पोस्ट के बीच,
पल अनजाने खो जाते है
हर रोज भाग दौड़ के बीच।
तो कह दूँ क्या इसे अभिशाप?
या फिर वरदान मान लूँ ?
सच तो ये है जैसा हम चाहे
वैसा ही इसे जान लूँ ।
सोशल मीडिया आईना है
जैसा देखो वैसा दिखे ,
समझदारी के हाथों में दीप है
वरना आग हैं।

कुसुम लता साहू
B.Sc. III

अकेला मुसाफिर...

निकल पड़ा हूँ सपनों को हकीकत में बदलने के लिए,

चल रहा हूँ अकेला, गिरकर रो रहा हूँ अकेला।

पर फिर से उठ खड़े होता हूँ, आँसू पोंछकर,

आगे बढ़ता हूँ अकेला।

क्या पता कुछ देर में ही आ जाए

मेरी मंजिलों का सवेरा,

इसलिए खुद से कहता हूँ,

ऐ चल मुसाफिर अकेला,

खुद की परछाई को देख,

उसे हमसफर बना तेरा।

क्या पता एक दिन में न सही,

लेकिन एक दिन मिल ही जायेगा

मंजिलों का सवेरा

देवेन्द्र कुमार ठाकुर

B.Sc. I Sem.

भेंटवार्ता

साहित्यकार कैलाश बनवासी जी से भेंटवार्ता के कुछ अंश

प्रश्नकर्ता - लुकेश चंद्राकर जी
उत्तरदाता - कैलाश बनवासी जी (साहित्यकार)

प्रश्नकर्ता - सबसे पहले अपने जीवन और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताइए।

उत्तरदाता - मेरा जन्म 10 मार्च 1965 को दुर्ग में ही हुआ है। मेरे पिताजी यहीं के है, मेरे पूर्वज ग्राम नंदकट्ठी के हैं, पूर्वज ग्रामीण परिवेश से हैं प्राथमिक हाईस्कूल एवं स्नातक स्तर की पढ़ाई दुर्ग में ही हुई है, बी. एस. सी (गणित) उपरान्त एम० ए० अंग्रेजी साहित्य में किया। 1984 के आस-पास लिखना शुरु किया, आरंभ में बच्चों एवं किशोरों के लिए लेखन कार्य किया। स्नातक पश्चात नौकरी लग गई। नौकरी के साथ साहित्यिक कार्य भी चलता रहा। स्कूल की लाइब्रेरी एवं हिन्दी भवन में जाकर अध्ययन करता था ।

प्रश्नकर्ता - साहित्य लेखन की अभिरुचि आपको कैसे हुई ।

उत्तरदाता - अर्जुदा के ही सर बलदाऊ प्रसाद शर्मा कक्षा 10-11 वीं में हिन्दी पढ़ाते थे, हिन्दी इतना धुन से पढ़ाते थे, पूरा कक्षा उसके धुन में रम जाती थी । निराला. पंत, प्रसाद की छवि हमारे दिल दिमाक में बसते गया वहीं से साहित्यकार बनने की प्रेरणा मिली। मेरी पहली कहानी अप्रैल 1983 में अप्रैल फूल देश की बड़ी पत्रिका में छपा। इस तरह मेरी यात्रा की शुरुवात हुई।

प्रश्नकर्ता - आपने गद्य विधा में अधिकांश रचनाएं की है, इसके पीछे क्या कारण है?

उत्तरदाता - शुरू में मैंने भी कविताएँ लिखी थी। गद्य में मार्मिक पल होते हैं। उनकी अच्छे से व्याख्या हो सकती है, गद्य मुझे भाव-विभोर कर देता है प्रेमचंद जी की ईदगाह कहानी एवं रेणु जी की ठेस कहानी मुझे भाव- विभोर कर देती है।

रेणु की कहानी ठेस का पात्र सिरचन का त्याग, बिना पारिश्रमिक लिए उस बेटी के लिए सामान तैयार करना मुझे काफी प्रभावित किया। स्नातक प्रथम वर्ष में देशबन्धु पेपर में रविवारिय अंक में चित्र देखकर कहानी लिखता था। प्रथम पुरस्कार 50 रुपये मिला आगे प्रोत्साहन मिला। गद्य की समझ कहानी से विकसित होता गया।

प्रश्नकर्ता - आपको पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे हम प्रेमचंद को पढ रहे हैं, अनायास ही हमें प्रेमचंद की याद आ जाती है, अपने आप को प्रेमचंद के कितने करीब पाते हैं ?

उत्तरदाता - प्रेमचंद एक आइकान है मानक रूप में है, उसकी परछाई को भी छूना संभव नहीं है। कोई रचनाकार जिस समाज, वर्ग एवं परिस्थिति से आता है प्रभाव अवश्य पड़ता है। मैं साधारण परिवार से रहा है, मोहल्ला एवं ग्रामीण परिवेश पला बढा हूँ, मैंने सामाजिक रूप से जो देखा पाया उन सब चीज को लेकर जो चिंतन-मनन किया सब को लेकर कहानियाँ लिखी। प्रेमचंद पीड़ित एवं सर्वहारा वर्ग को न्याय दिलाने के लिए कार्य किया, उन्हीं के पद चिन्हों पर आगे बढ़ते हुए रचनाएं लिखी। कहानियां उन्ही लोगों से निकलती है जिनके जीवनमें दुःख होगा, इसलिए मेरे आस-पास जो पात्र थे मैंने उनको लिया। प्रेमचंद के कितना करीब आ पाया में नहीं कह सकता।

प्रश्नकर्ता - समकालीन कहानी, उपन्यास के नाम पर आजकल अधिकांश रचनाकार केवल अपनी दमित इच्छाएं ही पाठकों को परोस रहे हैं, उनके लिए आप क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तरदाता - सभी लोग इस परिदृश्य में नहीं है, जरूर कुछ लोग हैं जो व्यावसायिक सफलता के लिए वासना युक्त अश्लील लिख रहे हैं लेकिन पूरे साहित्यिक अमला को दोष नहीं दे सकते। कुछ लोग बाजारू ढंग से सस्ते एलीमेंट का प्रयोग कर लिखता है जिससे साहित्य में कुछ अश्लीलता आ जाता है। साहित्य का मूल्यांकन अच्छे लेखक के साहित्य से होता है उन्ही लोगों से देश एवं समाज का भला होता है साहित्य समाज का दर्पण हैष् अच्छे साहित्यकार इस कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं। बात वही है एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है इससे बात फैल जाती है।

प्रश्नकर्ता - आपकी व्यावसायिक भाषा अंग्रेजी होते हुए भी आपने साहित्य के लिए हिन्दी को चुना, इससे साहित्य लेखन में कोई परेशानी तो होती होगी ?

उत्तरदाता - भाषा कोई भी हो परेशानी नहीं करती बल्कि समृद्ध करती है। चीनी में कहावत है कोई व्यक्ति जितनी भाषा जानता है उतनी बार जन्म लेता है। में शुरू से गणित का विद्यार्थी रहा हूं, लेकिन मेरा झुकाव लेखन की ओर चला गया। अंग्रेजी भाषा की ओर इसलिए गया ताकि मैं विश्व के अनेक रचनाकारों को समझ सकूं। मेरे लिए अंग्रेजी सहायक भाषा है जो देश-विदेश के रचनाकारों को समझने में मदद कर रहे हैं।

प्रश्नकर्ता - आज का युग प्रचार-प्रसार का है किन्तु आप इन सबसे दूर रहते हैं, इसके पीछे आपके क्या विचार है?

उत्तरदाता - प्रचार-प्रसार का अपना महत्व हैमैं भी प्रचार प्रसार करता हूँ। लेकिन सोसल मीडिया का कीड़ा बनकर नहीं रहता। अध्ययन अध्यापन में ज्यादा समय देता हूँ। सोसल मीडिया से एकाग्रता भंग होता है। रचनाएं अच्छी हो तो प्रचार-प्रसार की ज्यादा आवश्यकता नहीं है. रचना में कोई बात है तो आगे के लोग सराहेंगे और जगह देंगे, ज्यादा चिंता करने की बात नहीं है।

प्रश्नकर्ता - आजकल के नवोदित रचनाकार और कॉलेज के उन छात्रों को जो लेखक बनना चाहते हैं क्या संदेश देना चाहेंगे?

उत्तरदाता - रचनाकार बनने की प्रक्रिया में उनका स्वागत है। रचनाकार बनने के लिए निःकलुष मन होना चाहिए, उदार मन होना चाहिए, मनुष्यगत अच्छाइयां होनी चाहिए। मनुष्यगत अच्छाइयों के बगैर कोई अच्छा रचनाकार नहीं बन सकता। व्यापक अध्ययन-मनन करना पड़ता है, इसी आधार पर लिखने वाला का दायरा बढ़ता है उसके सोच में विस्तार होता है। इससे जीवकोपार्जन नहीं हो पाता है, रचनाकार बनने के लिए मानसिक स्वतंत्रता होनी चाहिए। प्रेमचंद, निराला, अज्ञेय, केदारनाथ सिंह को पढ़कर ही आगे बढ़ पायेगें।

नवप्रवाह

प्रश्नकर्ता - आपने अपना बहुमूल्य समय महाविद्यालय को दिया, मैं महाविद्यालय परिवार की ओर से आपको धन्यवाद देता हूँ।

उत्तरदाता - मैं महाविद्यालय परिवार, प्राचार्य डॉ० सोमाली गुप्ता जी का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने महाविद्यालीन पत्रिका नवप्रवाह के लिए मेरा साक्षात्कार लेना उपयुक्त समझा। संस्कारधानी अर्जुदा का जो नाम है आगे भी बना रहे, आपके महाविद्यादय उत्तरोत्तर प्रगति करे यही मेरी शुभकामना है। विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देता हूँ।

शहीद गार्डन के उद्घाटन एवं शहीद दुर्वासा निषाद की प्रतिमा के अनावरण के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

रेडक्रॉस सोसाइटी / रेड रिबन क्लब activity

जनभागीदारी समिति स्वागत समारोह

वार्षिक क्रीड़ोत्सव 2025-26

सृजन (स्वरोजगार मेला) 2025-26

छत्तीसगढ़ी-भाषा के साहित्यकार
श्री दुर्गा प्रसाद पारकर जी से भेंटवार्ता

प्रश्नकर्ता - लुकेश चंद्राकर जी (अतिथि व्याख्याता)

उत्तरदाता - श्री दुर्गा प्रसाद पारकर जी (साहित्यकार)

प्रश्नकर्ता - पारकर जी सबसे पहले आप अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताइए।

उत्तरदाता - मेरा जन्म ग्राम बेलौदी (दुर्ग) 11 मई 1961 को हुआ। पिता श्री उदयराम पारकर एवं माता स्व० श्रीमती लीला देवी पारकर, पत्नी-नीलम पारकर, बेटा-केतन पारकर, बहू रवीना पारकर, बेटी भावना एवं नाती का नाम शौर्य पारकर है।

मैं तीसरा था तीन बहन के बाद मेरा जन्म हुआ (बहन कमला, बिमला, कला एवं परमिता) छत्तीसगढ़ में कहावत है तितरा जन्म लेने से परिवार उन्नति करता है या पतन की ओर चला जाता है। ईश्वर का वरदान है कि मेरे जन्म पश्चात परिवार उन्नति के मार्ग में आगे बढ़ा ।

प्रश्नकर्ता - साहित्य की प्रेरणा कहाँ से मिली है और रचना लिखना कब शुरु किया।

उत्तरदाता - बचपन में गणेश पर्व में हम सब बच्चे गणेश जी की प्रतिमा विराजमान करते थे, अनंत चतुर्दशी के दिन कार्यक्रम देते थे कुछ न कुछ दो-तीन लाईन लिखता था तो गणेश मंच से ही लेखन शुरु किया।

फिर जागत गांव नाटक (अंधविश्वास पर आधारित) लिखा, गाँव में जयभारत रामायण मंडली का गठन कर टीकाकार बना। लोगों की प्रशंसा पाकर धीरे-धीरे आगे बढ़ा, पत्र-पत्रिका समाचार-पत्र में छोटी-मोटी रचना छपता गया, मुझे प्रेरणा मिलती गयी इस तरह आगे बढ़ता गया।

प्रश्नकर्ता - अब तक प्रकाशित रचनाओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तरदाता - अब तक 21 रचनाएं प्रकाशित हो चुका है अनुवाद, नाटक, निबन्ध संग्रह, गीत संग्रह, व्यंग्य, नई कविता । (गीत संग्रह में एक सौ ग्यारह गीत है)। मुंशी प्रेमचंद्र द्वारा लिखित प्रसिद्ध उपन्यास प्रतिज्ञा एवं निर्मला का छत्तीसगढ़ी भाषा में अनुवाद। हरिशंकर परसाई के व्यंग्य का अनुवाद, फिल्म में गीत एवं संवाद लेखन ।

प्रश्नकर्ता - आप छत्तीसगढ़ी साहित्य के सभी विधाओं में लिखते हैं, बहुत से लेखक ऐसे हैं जो छत्तीसगढ़ी भाषा के साथ हिन्दी भाषा में भी लिखते हैं, आपने सिर्फ छत्तीसगढ़ी भाषा को ही चुना क्यों ?

उत्तरदाता - हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में लिखने वाले स्तरीय लेखक हजारों हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ी भाषा में लिखने वाले स्तरीय लेखक का अभाव था। छत्तीसगढ़ी भाषा को ऊंचाई में पहुंचाने के लिए देश (राष्ट्रीय) स्तर पर पहचान दिलाने के लिए और आने वाले लेखक इस भाषा की ओर प्रेरित हो इसलिए साहित्य-साधना के लिए छत्तीसगढ़ी भाषा को ही चुना।

प्रश्नकर्ता - आप विगत पैतीस वर्षों से साहित्य साधना कर रहे हैं, सबसे प्रिय रचना कौन सी है? और क्यों ?

उत्तरदाता - सन् 1993-94 में लिखना शुरु किया लोकमंजरी संस्था (भिलाई) में सम्पादक कार्य किया, हरि ठाकुर जी एवं रमेश नैयर जी से प्रेरणा पाकर विभिन्न समाचार पत्रों में स्तम्भ, आनी बानी के गोठ छतीसगढ़ी भाषा व्यंग्य, चिन्हारी छतीसगढ़ी निबंध (दैनिक भास्कर) में लिखना शुरु किया।

प्रिय रचना पारिवारिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास 'बहू हाथ के पानी' है। इस रचना में छत्तीसगढ़ के तमाम रस एवं संबंध भरा है, माता-पिता, पुत्र-पुत्री, बेटा बेटी, बहू का सम्बन्ध संयुक्त परिवार पर आधारित उपन्यास है, इसलिए प्रिय रचना है।

<u>प्रश्नकर्ता</u> - प्रेमचंद, निराला, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय आदि संघर्षों में तपकर कुंदन की तरह निखरे, क्या आपको भी संघर्षों का सामना करना पड़ा ?

<u>उत्तरदाता</u> - मेरा जन्म अंकाल के समय हुआ है, बचपना गरीबी एवं भूखमरी में बीता। मेरी पढ़ाई कई जगह हुई है। 10-11 किलो मीटर पैदल पढ़ाई करने जाता था, बिना चप्पल के पैदल जाना पड़ता था सड़क के स्ट्रीट लाइट में पढ़कर परीक्षा दिलाया हूँ, विषम परिस्थिति ने ही मुझे आगे बढ़ने को प्रेरित किया।

<u>प्रश्नकर्ता-</u> आपने कई हिन्दी छतीसगढ़ी फिल्मों एवं दूरदर्शन के लिए गीत लिखा है विस्तार से बताइए ।

<u>उत्तरदाता</u> - गोपाल फिल्म के बैनर तले छतीसगढ़ी फिल्म मोर धरती मैया में गीत लेखन। जिसे पद्मश्री महेंद्र कपूर, एस. ए. कादर और हेमलता द्वारा स्वर दिया गया।

छत्तीसगढ़ी भाषा फिल्म 'मोर मन के मीत' में गीत लेखन। लघु फिल्म 'बुधु के हनुमान' में लेखन कार्य । महिला एवं बाल विकास पर केन्द्रित फिल्म 'सोन चिरई' गीत एवं संवाद लेखन ।
शिवनाथ नाटक (लोक रागिनी संस्था द्वारा प्रस्तुत लाईट एवं साउंड
नाटक लेखन प्रस्तुति- 'मंथरा'
डॉक्यूमेंटरी फिल्म मां बम्लेश्वरी के भक्ति परसाद ।
ऑडियो कैसेट में गीत लेखन निर्माता- प्रेम चन्दाकर ।
छत्तीसगढ़ी भाषा फीचर फिल्म 'चिंगारी' का सुटिंग पूर्ण।
टेली फिल्म 'सास बहु के झगरा' सोन चिरई।

प्रश्नकर्ता - उन कॉलेज के छात्रों को क्या सलाह देंगे जो लेखक बनने का सपना देखते हैं।

उत्तरदाता - पहले रोजगार की व्यवस्था करें जीवकोपार्जन के लिए रोजगार बहुत जरूरी है क्योंकि साहित्य साधना से अपना परिवार का भरण-पोषण नहीं कर सकते, आर्थिक रूप से मजबूत होने के बाद आप पुरे मनोयोग से साहित्य साधना कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता - किसी नए या महत्वाकांक्षी लेखक को आप क्या सुझाव देंगे ?

उत्तरदाता - मैं नए या महत्वाकांक्षी लेखक को कहना चाहता हूं कि वे पढ़े ज्यादा लिखे कम, हालांकि लेखक बनना ईश्वरीय देन है, साधना करके कठिन परिश्रम से लेखक बना जा सकता है, साथ ही स्तरीय लिखकर आप आगे बढ़ सकते हैं। डॉक्टर, इंजीनियर बनाया जा सकता है, लेकिन लेखक बनना ईश्वरीय देन है।

प्रश्नकर्ता - आजकल विराट हास्य कवि सम्मेलन के बहाने फूहड़ता परोसी जाती है, इसके बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

उत्तरदाता - मेरा मानना है कि आप ऐसी रचना लिखें जिसे परिवार के सभी सदस्य पढ़ सके, फूहड़ता नहीं होना चाहिए रचना सकारात्मक होना चाहिए नकारात्मक प्रभाव डालने वाला नहीं । द्वि-अर्थी रचना का मैं समर्थन नहीं करता हूँ।

प्रश्नकर्ता - आजकल साहित्यकार साहित्य कम लिखता है, प्रसिद्धि पाने के लिए राजनीतिक व्यक्तित्व के बारे में ज्यादा लिखते हैं, क्या आपने भी कभी ऐसा किया है।

उत्तरदाता - मैंने इस प्रकार का कार्य कभी नहीं किया न ही मैं राजनीतिक व्यक्तित्व का चाटुकारिता किया न करूंगा। आपकी पहचान आपकी रचना है, रचना में दम है तो रचनाकार अजर अमर हो जाएंगे. जैसे प्रेमचंद, निराला. बांग्ला भाषा के लेखक टैगोर जी ।

प्रश्नकर्ता - लेखक बनने के लिए आपको किससे प्रेरणा मिली है?

उत्तरदाता - लेखक बनने के लिए मुझे पिताजी से प्रेरणा मिली। मेरे पिताजी नाचा में जोक्कर का काम करते थे, गाँव में कृष्ण लीला एवं रामलीला होता था. धीरे-धीरे अभ्यास किया उसी समय लेखक बनने की प्रेरणा मिली, मेरे प्रेरणा स्रोत-पिताजी रहे हैं।

प्रश्नकर्ता - आपके साहित्यिक जीवन में ऐसा कोई व्यक्तित्व आया जिनसे आप प्रेरित हुए हैं और आगे बढ़े हों।

उत्तरदाता - डॉ. सुराना (हिन्दी विभागाध्यक्ष साइंस कॉलेज दुर्ग) डॉ. दीनदयाल दिल्लीवार (सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभागाध्यक्ष शा० नवीन महा० बेलौदी) के मार्गदर्शन से ही मेरी लेखन शैली में सुधार आया। इन दोनो से प्रेरणा पाकर ही आज इस मुकाम पर पहुंचा हूँ।

प्रश्नकर्ता - पाठकों को क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तरदाता- मेरी रचना से एक भी पाठक प्रेरित होते हैं यही मेरी सफलता है। पाठक रचना पढ़कर सिर्फ बड़ाई न करे, बल्कि समीक्षा करें उसमें जो कमियां हो उसे बताए ताकि आगे चलकर मैं सुधार कर सकूँ। नवा पीढ़ी ला संदेश देना चाहता हूँ कि अपने रास्ते से न भटकें, संस्कार न भूलें।

प्रश्नकर्ता - आपने अपना बहुमूल्य समय महाविद्यालय को दिया- मैं महाविधालय परिवार की ओर से आपको धन्यवाद देता हूँ।

उत्तरदाता - मैं महाविद्यालय परिवार एवं प्राचार्य डॉ सोमाली गुप्ता जी को सादर धन्यवाद देना चाहता हूँ आप सबने मुझे इस काबिल समझा मेरी साहित्यिक यात्रा कॉलेज की पत्रिका नवप्रवाह में सामिल हो। हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जीवन का आधार है खेल

खेल समग्र जीवन के लिए आवश्यक हैं, ये शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तंदुरुस्ती को बढ़ावा देते हैं, टीम वर्क को बढ़ावा देते हैं, तथा अनुशासन और दृढ़ता जैसे मूल्यवान जीवन कौशल सिखाते हैं।

खेल कई लाभ प्रदान करते हैं, जिसमें बेहतर शारीरिक स्वास्थ्य, तनाव में कमी और संज्ञानात्मक कार्य में वृद्धि शामिल है। वे टीमवर्क, संचार और जीत-हार दोनों को संभालने की क्षमता जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल भी विकसित करते हैं। चाहे प्रतिस्पर्धात्मक रूप से खेला जाए या मनोरंजन के लिए, खेल अधिक संतोषजनक और संतुलित जीवन जीने में योगदान करते हैं। खेल व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करने में मदद करते हैं।

खेल व्यक्तियों को शारीरिक गतिविधि से परे, खेल अनुशासन सिखाते हैं, दृढ़ता का महत्व सिखाते हैं और मूल्यवान जीवन कौशल विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, कबड्डी, खो- खो जैसे टीम खेल खेलना, खिलाड़ियों को दूसरों के साथ सहयोग करना, प्रभावी ढंग से संवाद करना और कोर्ट पर बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होना सिखाता है।

खेल के लाभ मैदान या कोर्ट से परे भी हैं। नियमित शारीरिक गतिविधि पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करती है, हृदय स्वास्थ्य में सुधार करती है और ऊर्जा के स्तर को बढ़ाती है। इसके अलावा, मूड को बेहतर बनाकर और उपलब्धि की भावना को बढ़ावा देकर मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ा सकते हैं।

खेल सामाजिक संपर्क और सामुदायिक निर्माण के लिए भी एक मंच प्रदान करते हैं। चाहे स्थानीय लीग में भाग लेना हो या पेशेवर खेल (ओलम्पिक) देखना हो, खेल लोगों को एक साथ लाते हैं, सौहार्द और साझा जुनून की भावना को बढ़ावा देते हैं।

खेल को अपनाने से हम न केवल अपने शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं, बल्कि मूल्यवान जीवन कौशल भी विकसित करते हैं जो मैदान पर और बाहर दोनों जगह हमारे लिए उपयोगी साबित होंगे।

मोनिका वर्मा
(क्रीडा सहायक)

दैनिक जीवन में भूगोल

भूगोल (Geography) - Geo पृथ्वी और Graphy वर्णन करना अर्थात पृथ्वी का वर्णन करना। मानव पृथ्वी का निवासी है, मानव की जो मूलभूत आवश्यकता रोटी, कपड़ा, मकान का संबंध भूगोल से है इसलिए मानव के दैनिक क्रियाकलापों की जानकारी के लिए भूगोल का ज्ञान आवश्यक है जैसे-

(1) भोजन - भूगोल एक क्षेत्रीय विज्ञान है जो हमें विभिन्न क्षेत्रों में कौन से खाद्य पदार्थ उगाई जा सकती हैं या नहीं तथा कौन से खाद्य पदार्थ उपलब्ध हैं की जानकारी प्रदान करता है।

(2) आवास भूगोल के अध्ययन से हमें विभिन्न भू आकृतियों में किस प्रकार के आवास का निर्माण जैसे झोपड़ी, एक मंजिला, बहु मंजिला इमारत के निर्माण की जानकारी होती है।

(3) कपड़ा भूगोल हमें किस ऋतु में कौन से वस्त्र धारण करनी चाहिए इस बारे में भी जानकारी प्रदान करता है जिससे मानव को ग्रीष्म, शीत एवं वर्षा ऋतु में सहायता हो सके।

(4) मानचित्रों का उपयोग भूगोल की सहायता से हम मानचित्रों का उपयोग करना सिखाते हैं जिससे हम किसी भी स्थान की दूरी, दिशा और उस क्षेत्र की संरचना को समझ सकते हैं।

(5) मौसम का अध्ययन भूगोल हमें मौसम में होने वाले परिवर्तन को समझने में मदद करता है जिससे हम मौसम का पूर्वानुमान लगाकर अपने दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में बदलाव ला सकते हैं।

(6) पर्यावरण - भूगोल हमें पर्यावरण संरक्षण से संबंधित तथ्यों के बारे में जागरूक करता है जिससे हम प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं।

मानव के जीवन को भौगोलिक तथ्य प्रभावित करते हैं, जिसके परिणाम स्वरुप उनके खान-पान रहन-सहन पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। अतः मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति किन वातावरणीय परिस्थितियों में हो सकती है इसका अध्ययन भी भूगोल में किया जाता है।

डॉ. मिली चंद्राकार
अतिथि व्याख्याता भूगोल

महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक रूप से सक्षम बनाना है, ताकि वे समाज में समान अधिकारों और अवसरों के साथ भागीदारी कर सकें। किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जब महिलाएँ शिक्षित, आत्मनिर्भर और निर्णय लेने में सक्षम होती हैं, तो इसका सकारात्मक प्रभाव पूरे समाज और देश की प्रगति पर पड़ता है।

महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास का भी एक सशक्त माध्यम है। महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी से उत्पादन क्षमता बढ़ती है, उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलता है और रोजगार के नए अवसर सृजित होते हैं। इसके साथ ही आय असमानता में कमी आती है और समाज में संतुलन स्थापित होता है। महिलाएँ छोटे उद्योगों, स्टार्टअप और नवाचार के माध्यम से आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में आज भी पितृसत्तात्मक सोच और सामाजिक बाधाओं के कारण महिलाओं की आर्थिक भागीदारी सीमित है। ऐसे परिदृश्य में स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups – SHG) महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये समूह महिलाओं को बचत, ऋण, स्वरोजगार और उद्यमिता के अवसर प्रदान करते हैं। श्री महिला गृह उद्योग (लिज्जत पापड़) इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने सीमित संसाधनों से शुरू होकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाते हुए एक सफल सहकारी उद्यम का रूप लिया।

महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। महिला सशक्तिकरण से आर्थिक विकास को गति मिलती है और आर्थिक विकास से महिलाओं को आगे बढ़ने के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। अतः एक समावेशी, समृद्ध और सतत विकासशील समाज के लिए महिलाओं का सशक्त होना अनिवार्य है।

डॉ प्रभा यादव
(अतिथि व्याख्याता अर्थशास्त्र)

वंदे मातरम् हिंदी कविता के रूप में

करजोड़ आराधना मैं तिलक-चंदन करती हूं,
हे ममतामयी भारत मां मैं आपको वंदन करती हूं।
स्वच्छ जल से भुखंड भरा है, मीठे फलो से पूर्ण धरा है।

प्रेम करुण से लबरेज ऐसी मनोरम धरती है,
मलय पर्वत की वायु जिसकी शीतल करती है।
अन्न के खेती से भरी धरा का, मैं अभिनंदन करती हूं,
हे ममतामयी भारत माँ, मैं आपकी वंदन करती हूं,

चंद्रमा के प्रकाश से, राते जिसकी चहक रही है,
कोई खिले फूलो के पेड़ों से मिट्टी जिसकी महक रही है।
सदैव हंसती रहती माता, कंठ से मधुर भाषा है,
आपका सुखद वरदान ही, कुशल जीवन की आशा है।

करजोड़ आराधना मैं तिलक चंदन करती हूं,
हे ममतामयी भारत मां, मैं आपको वंदन करती हूँ।
मैं आपको वंदन करती हूँ।

चंचल बंजारे
B.Sc. III Year

सामाजिक समरसता के प्रतीक गुरु घासीदास

संत शिरोमणि गुरु घासीदास बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न संत थे। उनकी वाणी जनमानस की वाणी थी। उनके विचारों का सर्वाधिक प्रभाव आम जनमानस पर गहरे रूप में पड़ा। अपने समकालीन संतो में उनका गहरा प्रभाव छत्तीसगढ़ की जनता पर पड़ा।

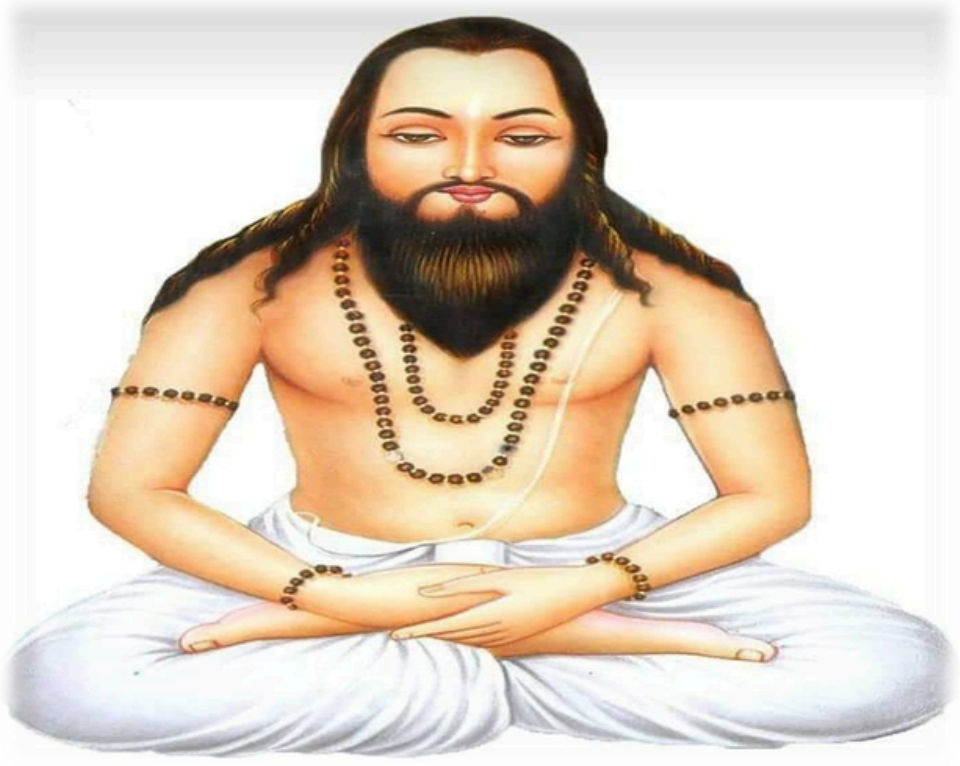

गुरुघासीदास का जन्म छतीसगढ़ के बलौदा-बाजार जिले के गिरोधपुरी ग्राम में सन 1756 में सामान्य और गरीब परिवार में हुआ था। क्रांतिकारी संत कबीरदास के समान गुरु घासीदास ने सामाजिक कुरुतियों पर करारा प्रहार किया। सतनाम धर्म के प्रवर्तक गुरु घासीदास जातीय भेदभाव, अंधविश्वास, बलि प्रथा, समाज में भाई-चारे के अभाव को देखकर दुखी थे। सामाजिक विषमता को दूर करने एवं सत्य की खोज के लिए गिरौधपुरी के जंगल में छाता पहाड़ पर छः माह समाधि लगाए रहे, ज्ञान प्राप्ति के बाद गुरु घासीदास ने सतनाम धर्म की स्थापना की।

गुरु घासीदास का मानना था कि समाज में व्याप्त जातिगत व्यवस्था मनुष्य को बाटने का कार्य करती है। गुरु घासीदास के मतानुसार समाज में प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक रूप से समान स्थान रखता है, मनखे-मनखे (मानव-मानव) एक बराबर है, गुरु घासीदास का लक्ष्य स्पष्ट था वे समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे इसलिए उन्होने मनुष्य-मनुष्य के बीच दूरी को समाप्त करने का प्रयास किया।

गुरु घासीरास ने मूर्तिपूजा को नकार दिया, उनका मानना था ईश्वरीय प्रेम मन (हृदय) से होता है, सत्य ही ईश्वर है, और ईश्वर ही एकमात्र सत्य है। मन वचन एवं कर्म से सत्य का पालन करना चाहिए-

ए मंदिरवा म का करे जाइबो.
अपन घट के ही देवा ला मनइबो ।
पथरा के देवता दीदी हाले नहीं डोले वो, ना कहू ला देखे दीदी न कहूँ ला बोले वो।
अपन घट के ही देवा ला मनइबो-..

गुरु घासीदास ने अंधविश्वास, जादू-टोना, नरबलिप्रथा, आडंबर एवं चमत्कार प्रदर्शन को खुली चुनौदी दी है। जनश्रुति अनुसार पहले छत्तीसगढ़ में अंधविश्वास के कारण नरबलि प्रथा चलन में था जिसका गुरु घासीदास ने पुरजोर विरोध किया।

गुरु घासीदास सफेद रंग के कपड़े पहनने पर बल देते हैं ताकि लोग एक जैसे ही देश और समाज में एक जैसी भावना पैदा हो सके। गुरु घासीदास द्वारा परिकल्पित पंथी नृत्य व गीतों में कबीर के दोहों की तरह समाज को जगाने वाली वैज्ञानिक विचारधारा होती है। संत गुरु घासीदास ने अपने संदेश में कहा कि सत्य ही ईश्वर है,। सत्य को आचरण पर उतारें। जीव हत्या पाप है. सभी जीव समान है। ब्रह्म निर्गुण निराकार है। माँस भक्षण पाप है, पशु बलि अंधविश्वास है। मूर्तिपूजा निषेध है। शराब धूम्रपान करना मनाही है।

नारी एवं पुरुष समान है, पर नारी को माँ जानो। चोरी करना पाप है। गुरु का सम्मान करें। सतनाम धर्म का पालन गृस्थ्य में रहकर भी किया जा सकता है। विधवा विवाह नारियों के लिए समाज लागू करे ताकि नारी समाज में सम्मानपूर्वक जी सके। मानव काम, क्रोध, लोभ, मोह का परित्याग करे।

इस तरह से हम कह सकते हैं कि संत शिरोमणि गुरु घासीदास के विचार सामाजिक समरसता के प्रतीक हैं. इसे छत्तीसगढ़ में आज भी महसूस किया जा सकता है।

लुकेश चंद्राकार
आतिथि सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

मोर छत्तीसगढ़, मोर संस्कार

मोर छत्तीसगढ़, मोर गहना,
माटी मं बसथे संस्कार।
गाँव-गाँव गूँजे लोक-गीत,
नाचा-गाना मं भरथे प्यार।

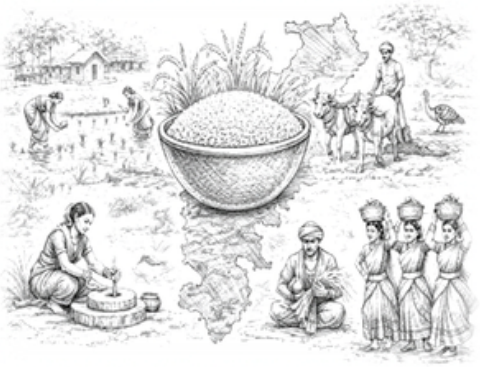

नदी, जंगल अउ हरियर धरती,
मोर माटी ला धन कहिथे।
संस्कार, मेहनत अउ सरल मन,
छत्तीसगढ़िया दिल कहिथे।

भजनी, ददरिया अउ सुआ नाचा,
त्योहार मं रंग झलके खूब।
छेर-छेरा, हरेली, पोला, तीज,
सजथे गाँव हंसी के झरूक।

मोर बोली, मोर परंपरा,
“सुघ्घर” कहि दुनिया देखथे।
कहाँ जाबो, मन मं बसत हे,
मोर छत्तीसगढ़, मोर संस्कार।

डुमेश कुमार
B.Sc. III Year

साल बदलेगा

कि नतीजा फिर वही होगा
सुना है साल बदलेगा।
मंजिलें फिर वही होंगी,
राह वही होगा,
राही चाल बदलेगा,
सुना है साल बदलेगा...।
बदलना है तो दिन बदलो
बदलकर नाम क्या होगा ...
महिने फिर वही होंगी
सुना है साल बदलेगा ...
शिकार फिर अब किसान होगा,
शिकारी जाल बदलेगा।
महिने, दिन वही होंगे... गोपी...
सुना है साल बदलेगा... ।।

गोपिका भारती
M.Sc. I Sem.

एक वीर की गाथा

जब सरहदों पर कदम रखता हूँ,
तो खुद को संपूर्ण पाता हूँ।
माटी की सौंधी खुशबू में,
अपने होने का अर्थ समझ
पाता हूँ,
तभी तो यूँ ही नहीं,
वीर कहलाता हूँ।
मैं भारत माँ का बेटा हूँ,
सर पर कफन बाँध आता हूँ।
न खुद झुकूँगा,
न झुकने दूँगा माँ तेरे
मस्तक को,
दुश्मनों को ललकार कर
ये सत्य बतलाता हूँ,
तभी तो यूँ ही नहीं,
वीर कहलाता हूँ।
हथियार नहीं,
हौसलों से भरा है मेरा जीवन।
हर तूफान से टकराना
मेरी आदत बन चुका है।
सैकड़ों शीश न्योछावर हैं
तेरी आन पर, मातृभूमिकृ
मैं भारत माँ का लाल हूँ,
दहाड़ बन कर गूँज जाता हूँ,
तभी तो यूँ ही नहीं,
वीर कहलाता हूँ।

खून से लथपथ काया भी
जब शंखनाद करती है युद्ध का,
तो मृत्यु भी ठिठक कर पूछती है,
क्या तू थक गया?
मैं मुस्कुरा कर कहता हूँ,
मर मिटा हूँ, मर मिटूँगा,
ये वचन फिर दोहराता हूँ,
तभी तो यूँ ही नहीं,
वीर कहलाता हूँ।
मैं था, मैं हूँ
और मैं रहूँगा
इतिहास की हर पंक्ति में।

कसम है इस पावन मिट्टी की,
अगर आँच भी आई इस पर,
तो सीना ढाल बनाऊँगा,
और जरूरत पड़ी तो
इसी धरती पर अपनी कब्र
सजाऊँगा, तभी तो यूँ ही नहीं,
वीर कहलाता हूँ।
जय हिन्द
जय भारत
जय छत्तीसगढ़।

यशोदा साहू
अतिथि सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी

तेरे काबिल नहीं

तुझसे जुड़ी हैं मेरी हर धड़कन,
पर तेरी धड़कनों में मैं नहीं,
तू तो है नूर मेरे अरमानों का,
और मैं साया, तेरे काबिल नहीं।

तेरी मुस्कान में उजाले हैं सारे,
पर मेरी आँखों में बस रात है,
तू बन गया मेरी दुआओं का सबब,
और मैं वो लम्हा जो भूल-सी बात है।

तू हर ऋतु में नई महक बनता,
मैं पतझड़ की सूनी डाली हूँ,
तेरे संग चलने की चाह रखूँ,
पर खुद से ही मैं खाली हूँ।

तू है साक्षात प्रेम की मूरत,
मैं शब्द अधूरे, अर्थ नहीं,
तू है रोशनी मेरी रूह की,
और मैं अँधेरा तेरे काबिल नहीं।

कभी तेरी याद जो दिल को छू ले,
तो मुस्कुरा देना बस इक पल,
तेरी मुस्कान ही मेरी दुनिया है,
तेरी खुशी में ही मेरा कल।

डॉ. जयनेंद्र श्रीवास
अतिथि सहायक प्राध्यापक - गणित

और क्या लिखूँ...

मजबूरियों को मत कोसो
हर हल में चलना सीखो
छल में बेशक बल है
लेकिन प्रेम में
आज भी हल है।

मजबूरियों को मत कोसो
हर हाल में चलना सिखों
सपनों से तकदीर नहीं बनती
बिना मेहनत तो
तस्वीर भी नहीं बनती
ये समय नहीं मिलेगा वापस
कर लो मेहनत बना लो
अपनी तकदीर
बता दो अपनी ताकत ...

हर पल, हर क्षण
लगन इससे लगी रहे
हवा का तेज बहाव हो
या हो घोर अँधेरी रात

आश तेरी ये न छूटे
विश्वास किसी का न टूटे
पढ़ो ऐसे की
जीवन संवर जाये ....

जिन्हें है तुम पर विश्वास
बुझने मत देना माँ- बाप की आश
याद कर लेना उनके चरणों को
न जाने कितने कंकड़ों में चले है,
तुम्हारे खातिर,
अपना जीवन न्योंछावर किये है।

सचिन यादव
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

दैनिक जीवन में विज्ञानः एक दार्शनिक दृष्टि

कैसे विज्ञान हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करता है ?

दैनिक जीवन में विज्ञान प्रत्यक्ष रूप से भले ना दिखाई दे लेकिन हर चीज विज्ञान के नियमों से चलती है। इनकों समझने की जितनी कोशिश करें उतना ही अंचभित करता है।

दैनिक जीवन मे विज्ञान हमें तर्कशीलता, विवेक और प्रमाण आधारित सोच की ओर प्रेरित करता है। हम किसी भी चीज के पीछे के कारण एवं परिणाम के सम्बन्ध को समझने की कोशिश करते है। दार्शनिक रूप् से विज्ञान मानव को प्रकृति का स्वामी नहीं बल्कि उसका जिज्ञासु सहभागी बनाता है। समय की गणना,स्वास्थ्य की देखभाल,भोजन का चयन या संसाधनों का उपयोग हर स्तर पर विज्ञान चेतन निर्णय लेने की क्षमता देता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना भी उतना ही आवश्यक है । एक इंसान जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखता है और एक जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं रखता है दोनों के जीवनशैली में अंतर साफ दिखाई देता है। अगर व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोण ना रखें तो वो अंधविश्वास की ओर अग्रसर होता है। जो व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखता है, वह जीवन के प्रति उत्सुक, जागरूक और फलस्वरूप जीवन की ज्यादा समझ रखता है। ऐसे व्यक्ति अंधविश्वास के स्थान पर विवेक को अपनाते है।

भारत के मौलिक कर्तव्यों की सूची में 1976 में संविधान सुधार किया गया जिसमें 8वां कर्तव्य है कि ‘‘भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता और अनुसंधान एवं सुधार की भावना का विकास करें।”

क्या हम बिना वैज्ञानिक दृष्टिकोण के एक समाज के तौर पर आगे अग्रसर हो सकते है ?

समाज का एक जागरूक तबका छात्र बनाते है और अगर छात्र शिक्षित हो जाए लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित ना कर पाये तो ऐसी शिक्षा असफल है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने से छात्रों में भी बेहतर और सक्षम...

निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है साथ ही समज में सकारात्मक योगदान देने के लिए जो विशेषतायें और कौशल चाहिए उसका भी विकास होता है।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि दैनिक जीवन में विज्ञान मानव चेतना के विकास का साधन है। यह हमें प्रश्न करना सीखाता है सत्य के प्रति विनम्र बनाता है और निरंतर आत्म सुधार की ओर अग्रसर करता है। विज्ञान का योगदान हमारे जीवन में अमूल्य है।

डॉ प्रीति
सहायक प्राध्यापक (प्राणीशास्त्र)

भीतर का बसेरा

स्वयं का हाथ थामे, मैं खड़ी हूँ आज,
उसी स्वरूप में, जिसका स्वप्न वर्षों तक बुना था।
गर्व के साथ, ऊँचे स्वर में कहना चाहती हूँ ,
हाँ! मुझे खुद से, खुद के अस्तित्व से प्रेम है।
मुझे प्रिय है मेरा अपना एकांत,
अपनी ही छाया में सुरक्षित हूँ।
बाहर की दुनिया चाहे जैसी भी हो,
मेरे भीतर मेरा अपना एक समृद्ध घर है।
वक्त की धारा सहज हो या विपरीत,
मैं उस थामे हुए हाथ को कभी न छोड़ूँगी
वो हाथ, जिसने हर संघर्ष और हर
मोड़ पर बिना शर्त मेरा साथ दिया।
क्योंकि वह सशक्त हाथ... मेरा अपना ही है।

डॉ. प्रीति
सहायक प्राध्यापक जन्तु विज्ञान

औषधी पौधा औषधी पौधा (Medicinal Plant)

प्रकति ने हमें अनेक प्रकार की वनस्पतियां प्रदान की है। जिनमें औषधीय पौधों का विशेष स्थान है। ये पौधे न केवल हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं, बल्कि रोगों के उपचार में सहायक होते है। आयुर्वेद, यूनानी और होम्योपैथिक चिकित्सा पद्यतियों में इनका उपयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। औषधीय पौधे बायोएक्टिव यौगिकों से भरपुर होते हैं, जिन्हें फायटोकेमिकल के नाम से जाना जाता है जैसे एल्क्लॉयड, फ्लेवोनायड, टैनिन, टेरपेनॉइड जो उनकी चिकित्सकीय क्षमता में योगदान करते हैं। पौधो के विभिन्न भाग जैसे पत्ती, जड़, तना, बीज, छाल फल-फूल आदि से औषधियां प्राप्त की जाती है। औषधीय पौधे न केवल बीमारियों के इलाज में सहायक होते हैं, बल्कि उन्हें प्रतिदिन के जीवन में भी उपयोग किया जा सकता है, जैसे हर्बल चाय, घरेलु नुस्खे आदि में।आज जब आधुनिक दवाओं के दुष्प्रभाव सामने आ रहे है, तब लोग पुनः प्राकृतिक और आयुर्वेदिक उपचारों की ओर लौट रहे है। कोरोना महामारी के समय में भी तुलसी, गिलोय, अदरक, हल्दी, कालीमिर्च आदि का उपयोग बहुत बढ़ा। पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए इनका उपयोग स्वास्थ्य के लिए लाभकारी सिध्द हो रहा है। इन पौधों का संरक्षण और जागरुकता आवश्यक है ताकि आने वाली पीढियाँ भी उनके लाभों का उपयोग कर सकें ।